भगत नामदेव - सबद ७

जौ राजु देहि त कवन बडाई ॥

रागु गूजरी, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ५२५

जौ राजु देहि त कवन बडाई ॥
जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई ॥१॥
तूं हरि भजु मन मेरे पदु निरबानु ॥
बहुरि न होइ तेरा आवन जानु ॥१॥ रहाउ ॥
सभ तै उपाई भरम भुलाई ॥
जिस तूं देवहि तिसहि बुझाई ॥२॥
सतिगुरु मिलै त सहसा जाई ॥
किसु हउ पूजउ दूजा नदरि न आई ॥३॥
एकै पाथर कीजै भाउ ॥
दूजै पाथर धरीऐ पाउ ॥
जे ओहु देउ त ओहु भी देवा ॥
कहि नामदेउ हम हरि की सेवा ॥४॥१॥

सार: उपाधियाँ और पद हमारा मूल्य तय नहीं करते। अमीर और वंचित, दोनों ही क़ुदरत की विशाल तस्वीर में समान महत्त्व रखते हैं। सूरज महल में राजा को उतनी ही गर्मी देता है जितनी छप्पर के नीचे बैठे भिखारी पर। रेशमी कपड़े हमारे विचारों को ऊपर नहीं उठाते जैसे फटे कपड़े उन्हें कम नहीं करते हैं। एकत्व को स्वीकार करने से हम अहं और विभाजन से मुक्त हो जाते हैं और समझते हैं कि हम सभी एक ही सृष्टि-तंत्र का हिस्सा हैं। यहाँ बाहरी पहचान अपना अर्थ खो देती है और केवल हमारी साँझी चेतना की पवित्रता और सार ही प्रकट होता है।

जौ राजु देहि त कवन बडाई ॥

अगर किसी को राज्य मिल जाए तब उसमें क्या महानता है। यह संकेत करता है कि रुतबा, ताक़त और दौलत अस्थायी हैं, वह मनुष्य के असली मूल्य में कोई योगदान नहीं देते।

जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई ॥१॥

अगर कोई व्यक्ति अभाव में घट कर भीख मांगने की अवस्था पर आ जाए तब वह असल में क्या खो देता है? इसका अर्थ है कि विनम्रता और ज्ञान की दृष्टि में, समृद्धि और अभाव समान हैं। (१)

तूं हरि भजु मन मेरे पदु निरबानु ॥

हे मन, मुक्ति की अवस्था को अनुभव करने के लिए सर्वव्यापक ऊर्जा का स्मरण करो। यह दृष्टिकोण मुक्ति को मौत के बाद की अवस्था न मानकर वर्तमान क्षण की जागरूकता में अनुभव करने की प्रेरणा देता है।

बहुरि न होइ तेरा आवन जानु ॥१॥ रहाउ ॥

आध्यात्मिक विकास और गिरावट के निरंतर उतार-चढ़ाव के चक्र समाप्त हो जाते हैं। यह बताता है कि लाभ-हानि, खोज और भटकाव की निरंतर अवस्थाएँ, ज्ञान के उदय पर शांत हो जाती हैं। (१)(विराम)

सभ तै उपाई भरम भुलाई ॥

सृष्टि का हर तत्व उसी सार्वभौमिक सृजनशील शक्ति से उदित होता है मगर हमारी अज्ञानता हमें भ्रमित कर देती है। यह स्मरण कराता है कि भीतर विद्यमान स्रोत को भूलना, अहं का कारण है।

जिस तूं देवहि तिसहि बुझाई ॥२॥

जिन्हें चेतना प्राप्त होती है वह सच्चाई को प्रदर्शित कर सकते हैं। यह स्मरण कराता है कि चेतना उपलब्धियों को कम, एकत्व एवं विनम्रता को अपनाने के लिए खुलेपन के विकास को अधिक बढ़ावा देती है। (२)

सतिगुरु मिलै त सहसा जाई ॥

सत्य का साक्षात्कार होने पर सभी संदेह दूर हो जाते हैं। यह एकत्व के अनुभव में 'दूसरेपन' के लुप्त हो जाने का प्रतीक है।

किसु हउ पूजउ दूजा नदरि न आई ॥३॥

जब कोई दूसरा और दिखता ही नहीं तो मैं किसकी पूजा करूं। यह एकत्व के प्रति पूर्ण समर्पण को दिखाता है जहां साधक और साध्य एक हो जाते हैं। (३)

एकै पाथर कीजै भाउ ॥

एक पत्थर की पूजा भक्ति से की जाती है। इससे पता चलता है कि कैसे विश्वास, न कि सच्चाई, दिव्यता प्रदान करता है।

दूजै पाथर धरीऐ पाउ ॥

दूसरा पत्थर पैरों तले रौंदा जाता है। यह दिखाता है कि जब दिव्यता चुनी हुई चीज़ों तक सीमित होती है तब अलगाव समाप्त होने के बजाय और मज़बूत हो जाता है।

जे ओहु देउ त ओहु भी देवा ॥

अगर एक दिव्य है तब क्या दूसरा भी दिव्य नहीं है?

कहि नामदेउ हम हरि की सेवा ॥४॥१॥

नामदेव कहते हैं कि वह सर्वव्यापक ऊर्जा के प्रति समर्पित हैं। सार्वभौमिकता के लिए यह श्रद्धा पूजा को भीतरी रुख़ प्रदान करती है जो कर्मकांडों की आदत के बजाय सच पर आधारित होती है। (४)(१)

तत्त्व: भक्त नामदेव द्वैत के भ्रम और मन की उस प्रवृत्ति को उजागर करते हैं, जो वस्तुओं, भूमिकाओं और रूपों को अलग-अलग मूल्य प्रदान करती है। इस विडंबना पर विचार करें कि दोनों

एक ही होते हैं, एक पत्थर की भक्ति में पूजा की जाती है जबकि दूसरे को लापरवाही से कुचल दिया जाता है। यह अंतर गहन सामाजिकता और आलोचनात्मक सोच की कमी से जुड़ी ग़लतफ़हमियों को सामने लाते हैं जो हमारी सोच को बनाते और बिगाड़ते हैं। मुक्ति का वास्तविक अर्थ तब मिल सकता है जब विभाजन का भ्रम समाप्त हो जाए जिससे हम समस्त अस्तित्व में व्याप्त मूल एकता को पहचान, उसकी सराहना करें।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com